हिन्दी अनुवाद : जीवन की कहानियां : हिन्दुत्व के प्रबल वकील

An Ardent Advocate of Hinduism

मेरा अनजान भविष्य सर्वशक्तिमान प्रभु ईसा मसीह, मेरे उद्धारक तथा ईश्वर की शरण में सुरक्षित है ।

मैं, एस आर जे, का जन्म रूढ़िवादी हिन्दु ब्राह्मण कुल में हुआ तथा उदारतापूर्ण माहौल में पालन पोषण हुआ । एक हिन्दु परिवार में जन्म लेने के नाते मुझे जीवन की हिन्दु परम्पराओं में रहना सिखाया गया । हिन्दुत्व मेरी रक्त-वाहिनियों में बह रहा था तथा मैं हिन्दु धर्म तथा जीवन में इसकी परम्पराओं का एक प्रबल तथा उत्साही वकील बन गया था ।

मेरे पिताजी जो पेशे से एक चिकित्सक थे, बड़े धार्मिक प्रवृति के थे । वे एक वर्ष में 12 से 15 दिन का अवकाश लेते तथा परिवार के सभी सदस्यों को देश के प्रसिद्ध मंदिर अथवा तीर्थ-मंदिर में दर्शन कराने ले जाते । मेरे सभी संबंधी हिन्दु धर्म के प्रति प्रतिबद्ध हैं तथा मूर्ति पूजा करते हैं ।

मैं भारत सरकार की एक बहुत अच्छी कम्पनी में कार्यरत हूँ तथा मेरी एक स्नेहमयी पत्नी तथा दो पुत्र हैं । मैं एक हिन्दू के रूप में सामान्य, पूर्ण रूप से आरामदायक जीवन व्यतीत र रहा था । मैंने न ही कभी धन दौलत की कमी महसूस की और न ही अपने संबंधियों के प्रेमपूर्वक व्यवहार तथा स्नेह से कभी वंचित रहा । फिर भी मैं सबसे एकांत अकेला रहता तथा बिना किसी कारण अशांत जीवन व्यतीत करता हालांकि चितां का कोई कारण नहीं था । मुझे न तो अपने सरकारी कार्य निष्पादन में और न ही अपने परिवार अर्थात् अपनी पत्नी अथवा बच्चों से किसी प्रकार की कोई समस्या थी ।

परन्तु मेरे भीतर निराशा, टूटन, अन्तर्द्वन्द्व में ग्रस्त तथा शांति की तलाश में भटकता रहता था । चूंकि हिन्दुओं के करोड़ों देवी देवता हैं, इसलिए मैं एक छोर से दूसरे छोर तक सच्चे देवी देवताओं की तलाश में यात्रा करता रहता । मैंने उत्तर भारत में अमरनाथ की प्रसिद्ध पावन गुफा तथा दक्षिण भारत के तिरूपति मंदिर के दर्शन किए परन्तु अंत में केवल

रिक्तता ही हाथ लगी । ऐसा लग रहा था कि किसी चीज़ का अभाव है । मैं ईश्वर की तलाश में मारा मारा फिरा परन्तु वह न मिला जिसकी मुझे तलाश थी । अपने मित्रों तथा अपने संबंधियों के लिए मैं बुद्धिमतापूर्ण एक असाधारण व्यक्ति था परन्तु मैं क्या था यह तो केवल मैं ही जानता हूँ । अपने सामाजिक दायरे में मैं एक प्रतिष्ठित तथा एक उच्चस्तर का सुसंस्कृत व्यक्ति था । वास्तव में मैं एक पाखण्डी था ।

उस सर्वशक्तिमान ईश्वर की करूणा की प्रशंसा करते हैं जो कभी अपने बच्चों को भटकने नहीं देता । एक बार का वाकया ऐसे हुआ कि मेरी पत्नी 1992 में अमेरिका में अपने भाई के घर गई । उसे ईसाई धर्म के सिद्धातों का विस्तार से पाठ पढ़ाया गया तथा उसने जीसस को अपने व्यक्तिगत उद्धारक तथा ईश्वर के रूप में स्वीकार कर लिया । जब वह भारत लौटीं तो मेरी आशाओं से परे की बात है कि वह एक शांत महिला थी जिसमें परिवर्तन हो चुका था । यह मेरे लिए एक आश्चर्य की बात थी । नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर ही उसने जीसस को अपना उद्धारक तथा ईश्वर स्वीकारने की घोषणा कर दी । इस स्थिति में एक हिन्दु पति के रूप में आप मेरी प्रतिक्रिया की कल्पना कर सकते हैं । उस घड़ी वास्तव में क्या हुआ, मुझे कुछ याद नहीं परन्तु ईसा में उसकी आस्था के बावजूद मैंने उसे स्वीकार किया ।

उसी घर में रहते हुए जहां दो भिन्न धार्मिक परम्पराओं से संबंधित व्यवहार होता था - एक वह जो जीसस में अपनी आस्था रख रहा था तथा दूसरा मिट्टी, लकड़ी तथा धातु के सैंकड़ों देवी देवताओं के समक्ष नत-मस्तक हो जाता था - इसमें रहने के लिए कठिन तथा भिन्न प्रकार की स्थिति थी ।

सच पूछें, मैंने अपनी पत्नी के जीवन में अत्यंत परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा ।उसके चेहरे में दमक तथा मन में शीतलता तथा शांत थी । वह शांत प्रवृति की धर्म ग्रंथों से ईश्वर की वाणी बिना किसी भय के बोलती थी तथा अदभुत धैर्य तथा सहन शीलता थी । वास्तव में, अधिकतर समय उसे न केवल मुझसे परन्तु हमारे संबंधियों से भी दुखद परिस्थितियों का सामना करना पड़ता । भारत में आप यदि किसी अन्य धर्म को अपनाते हैं तो आपको घृणा -नहीं की जाती । परन्तु यदि आप एक ईसाई धर्म अपना लेते हैं तो हिन्दुओं में एक विचारधारा है कि आपने सबसे बड़ा गुनाह कर लिया है । अब मैं अनुभव करता हूँ कि ईश्वर की मेरे तथा मेरे जीवन के लिए एक योजना थी । जर्मिया, अध्याय 29, कविता 11

के अनुसार *क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए मेरी क्या सोच रखा है, ईश्वर कहते हैं * ।

मेरी पत्नी के भाई जो अमेरिका में रहते हैं तथा ग्रेस वैली क्रिस्चियन सेंटर, डेविस, सी ए में उनके धर्म पुरोहित आदरणीय पी जी मैथ्यू वर्ष 1994 में नई दिल्ली में हमारे घर पधारे । मैंने ध्यानपूर्वक देखा कि मेरी पत्नी मेरे लिए तथा हमारे दोनों पुत्रों के लिए चुपचाप प्रार्थना कर रही थी परन्तु आदरणीय पी जी मैथ्यू अथवा किसी दूसरे को ईसाई धर्म ग्रंथों के प्रवचन सुनने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी । फिर भी मैथ्यू जी ने ईश्वर के प्रति प्रेम तथा मा-नव ा मुक्ति पर चर्चा करना नहीं छोड़ा । माननीय मैथ्यू तथा उनकी पत्नी ग्लैडीज़ हमें ईसाई धर्म के सिद्धांतों के प्रचार में कभी असफल नहीं रही, परन्तु मैं तथा मेरे दोनों पुत्रों ने उनके प्रवचन सुनने में कोई रूचि नहीं दिखाई ।

इन हालात में मैं दुखी था । इस विश्व में राज कर रहा शैतान जो मेरे भीतर था, उनके प्रवचनों को सुनने में रूकावट डालता था और मैं एक प्रबल हिन्दू ब्राह्मण बना रहा । अपनी आयु 46वे वर्ष (1994 में) में मुझे सही-गलत, सच्चे - झूठे की पहचान थी और आयु के इस पड़ाव में मैं जानता था कि आस्था में किसी प्रकार का परिवर्तन संभव नहीं था । मैं मानता हूँ कि मुक्ति अथवा पुनर्जन्म तथा अनन्त जीवन जिसके बारे में माननीय मैथ्यू बात कर रहे थे, उनके बारे में कुछ नहीं जानता । मुझे कभी विश्वास नहीं होता था कि जीसस ही मात्र ऐसा मार्ग थे जो कि जीवंत हैं ।

मा-न-ीय मैथ्यू 1995 में पुन: हमारे घर आए और इस बार वे ईसाई धर्म के सिद्धातों का अधिक दृढ़ता से प्रचार प्रसार कर रहे थे । ईमानदारी से पूछा जाए तो मुझे उनकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए था परन्तु मैंने हिन्दू ब्राह्मण परम्पराओं में मूर्ति पूजा को कभी नहीं छोड़ा । मैंने ईसाइत की मृत्यु के बाद जीवन को समझने में कोई अधिक ध्यान नहीं दिया क्योंकि मैं इसे भिन्न धर्म की दार्शनिकता समझता था । माननीय मैथ्यू, एक भारतीय परन्तु अब अमेरिका में रहते हैं । उन्होंने वापस जाने के बाद मुझे कुछ कैसेट भेजे जिनमें प्रवचन थे जो उन्होंने अमेरिका में डेविस में अपने गिरजाघर में दिए थे । उन्हें दृढ़ विश्वास था कि जीसस मेरे जीवन में एक दिन चमत्कार अवश्य करेंगे ।

हमारे दोनों पुत्र 1995 के अन्त तक हमारे साथ रहे तथा उसके बाद वे बाहर चले गए - एक नौकरी के लिए तथा दूसरा उच्च-अध्ययन हेतु । हम तीनों के लिए मेरे साला साहब, उनके धर्मगुरू तथा मेरी पत्नी की प्रार्थनाएं एवं याचिकाएं निरंतर रूप से होती रहीं । हमारे बड़े पुत्र ने ईसाई धर्म के सिद्धातों में रूचि लेनी प्रारम्भ की

फरवरी, 1996 में माननीय मैथ्यू तथा उनकी पत्नी एवं मेरे साला साहब हमारे घर आए । धर्म गुरू मैथ्यू ने दिनांक 5 फरवरी, 1996 को बिना विश्राम किए हमें ईश्वर संबंधी प्रवचनों से सिक्त किया । ईश्वर की करूणा अपार है, दिनांक 5 फरवरी, 1996 □ा रात्रि मैंने परिवर्तन अनुभव किया जैसे मैं ईश्वरीय आत्मा से जूझ रहा हूँ और ईश्वर मेरे सभी शंकाओं का समाधान करता जा रहा है । मैंने महसूस किया कि मेरा मन निर्मल तथा पाव-न हो □या है। मुझे इसका बिल्कुल आभास नहीं हुआ कि मैं कैसे ईश्वर के साथ व्यवहार करूं और न ही मैं यह जान सका कि मैं जीसस के करीब आता जा रहा हूँ । मेरे भीतर का शैतान अभी भी मुझे दूर जाने के लिए धकेल रहा था । यह सब कुछ समय तक होता रहा और अन्त में जीसस की इच्छा मेरे जीवन का अंग बन गई । मेरे भीतर का शैतान पराजित हुआ तथा मेरे जीवन में परिवर्तन की लहर आई । मुझे बड़ी राहत मिली और हृदय में शांति स्थापित हुई । मैंने अनुभव किया कि जीसस ने मेरे जीवन को परिवर्तित किया है तथा मैंने जीसस को यह कहते हुए सुना कि मेरे पास आओ तथा कहते गए *मैं ही एक मात्र मार्ग हूँ, सच्चाई तथा जीवन हूँ, यदि तुम जीवन से उकता/हतोत्साहित तथा बोझ बन चुके हो, आओ, मैं तुम्हें विश्राम प्रदान करूंगा और मुक्त करूंगा * । जीवंत ईश्वर की आत्मा मेरे हृदय में ध□-ध□ □र रही थी तथा मुझे आभास हुआ कि मेरा जीवंत ईश्वर से संबंध है तथा मैं उनका पुत्र हूँ । जीसस के समक्ष अपनी असफलताओं, त्रुटियों तथा गुनाहों पर पश्चाताप करने के बाद मैंने जीसस को खुले हृदय से अपना उद्धारक तथा प्रभु स्वीकारा । दिनांक 6 फरवरी, 1996 □ा धर्म□रू मैथ्यू -ने मुझे दीक्षित किया । दीक्षा संस्कार के तुरन्त बाद मैंने अनुभव किया कि अब मैं एक आज़ाद व्यक्ति हूँ जिसपर किसी चीज़ का कोई बोझ -हीं है तथा मुझे वो शांति मिली जिसकी तलाश में मैं भटक रहा था ।

जीसस से अधिक मुझे और कोई प्रिय नहीं । मैं अनन्त निंदा से बच गया । मैं समझता हूँ कि मेरे गुनाहों के कारण जीसस सूली पर झूल गए और मेरे गुनाहों की कीमत के बदले उन्हें सलीब पर अपना रक्त बहाना पड़ा । मुझे दृढ़ विश्वास है कि जीसस के प्रेम के प्रति कोई भी

इस दुनिया में मुझे अलग नहीं कर सकता । मुझे पता है कि स्वर्ग तथा पृथ्वी पर ईसा के सिवाय और कोई ईश्वर नहीं है, देहधारी ईश्वर, जो जीवंत है तथा मुझमें उसका वास है । वह मेरे व्यक्तिगत ईश्वर हैं । उस ईश्वर की अपार कृपा है कि हमारे दोनों पुत्रों ने जीसस को अपना उद्धारक तथा ईश्वर स्वीकार कर लिया है और वे अब ईसाई धर्म अपना चुके हैं ।

अपने को बचाने के लिए मैंने क्या किया ? मैंने पश्चाताप किया तथा अपने उद्धारक तथा स्वामी के रूप में जीसस में अपनी आस्था रखी । मित्रो, आप भी स्वयं को बचा सकते हैं यदि उद्धारक के रूप में जीसस में अपनी आस्था रखें । वे आपको जीवन में सभी प्र□ार □ी चिंताओं तथा कष्टों के बीच शांति तथा आनन्द प्रदान करेंगे तथा अनन्त जीवन प्रदान करेंगे । उनकी कृपा मेरे लिए पर्याप्त है । मैं अब ईश्वर के प्रेम तथा कृपा से समृद्ध होता जा रहा क्योंकि मुझे उन पर अधिक विश्वास/आस्था है । यह मेरा प्रमाण है । तथास्तु ।

एस आर जे, कोलकाता, भारत ।